विन्यास रंगमंच का अभिन्न अंग है या हम कहें की विन्यास के बिना रंगमंच की परिकल्पना करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन प्रतीत होता है, रंगमंच शब्द से ही विन्यास अपना अस्तित्व बना रखा है रंग+मंच एक ऐसा स्थान जहाँ दुनियाँ के रंगों को दुनियाँ के सामने रखा जाता हो, ज़ाहिर सी बात है कि जब हम दुनियाँ के रंगों (चरित्र, भाव, परिवेश आदि) को मंच पर लाने की बात करते हैं तो उसे लाने के लिए दुनियाँ को रचना होगा, जैसे ही हम दुनियाँ को रचते हैं तो हम दुनियाँ के आभासी प्रतिबिंब को मंच पर विन्यास ही तो करते हैं यही विन्यास 'रंगमंचीय विन्यास' के नाम से जाना जाता है।

जब हम 'रंमंचीय विन्यास' की बात करते हैं तो रंगमंच में उपयोग होने वाले आहार्य अभिनय के साथ-साथ पूरे नाट्य क्रिया के विन्यास को इस विषय में समाहित करते है। जिसे भरत ने आहार्य अभिनय और आधुनिक रंगमंच में रंगमंच विन्यास (Theater Design) (स्टेज क्राफ्ट, वस्त्र विन्यास, रूप सज्जा, संगीत एवं प्रकाश योजना) कहा है, प्रस्तुत शोध में इन सारे पक्षों को राजनीतिक संदर्भ में व्याख्यायित करने की कोशिस की जाएगी।

जैसा कि हम जानते हैं की कला के क्षेत्र में हर की जाने वाली रचना (रचनाकार के सामाजिक, राजनीतिक एवं कलात्मकता) किसी न किसी राजनीति तथा सौंदर्य से निर्मित होती है। उदाहरण स्वरूप किसी भी विन्यास कर्ता के विन्यास के पीछे एक दृष्टी (राजनीति एवं सौंदर्य) काम करती है जिसमें समाज कार्य, बाजार, ख्याति की लालसा जुड़ी होती है।

भारतीय रंगमंच में कभी भी रंगमंचीय विन्यास पर जोर नहीं दिया गया, संस्कृत नाट्य परंपरा के नाट्यशास्त्र में भरत मुनि ने रगमंचीय विन्यास को लेकर एक अध्याय लिखा हैं जिसे आहार्य अभिनय कहा गया। आहार्य अभिनय नामक अध्याय में भरत ने रंगमंच पर किया जाने वाले तमाम विन्यास का उल्लेख किया है जिसकी जरूरत नाट्य मंचन में पड़ सकती है। उन अध्यायों और

परंपराओं के बावजूद भारतीय रंगमंच ने विन्यास की जरूरत नहीं महसूस की। साथ ही बहुत दिनों बाद भारतीय परिपेक्ष में विन्यास की थोड़ी बहुत जरूरत 19वी शताब्दी में वाजिद अली साह का 'रहस' जो कैसरबाग में खेला गया तो वहाँ पर जो इमारते आवश्यकता अनुसार पहले से बनी हुई थी, बारहदरी,बाग, फ़वारे थी, उन्हें ही दृश्यों में लिया गया। अमानत की 'इन्द्रसभा' 1853 में बिना किसी विन्यास के खेला गया'। दृश्यों की सूचना संवादों में दे दिया जाता था जिससे प्रेक्षक को यह पता चल जाता था कि नाटक का दृष्य कहाँ चल रहा है। फिर यह ट्रेंड धीरे-धीरे आगे आया और विक्टोरियन रंगमंच से प्रभावित पारसी रंगमंच की स्थापना की गई, उसमें भी विन्यास के नाम पर था तो सिर्फ वस्त्र और मुखसज्जा, दृश्यों के लिए चित्रित पर्दे को लगाया जाता था। अभिनेता पर्दे के आगे अभिनय करते थे, पर्दा कहानी के अनुसार बदला जाता था। जिससे प्रेक्षक को संवादों के जरिये बताने के बजाय चित्रित पर्दों के द्वारा यह संप्रेषित किया जाता था कि कहानी जंगल में चल रही है या राजमहल में या किसी शहर के चौराहे पर।

विन्यास या विन्यासकर्ता की जो राजनीतिक सोच सौंदर्यपरकता या नाटकों के वाक्यों के बीच के भाव को जिसे न तो अभिनेता संप्रेषित कर पाते हैं और न ही निर्देशक अगर उसे कोई संप्रेषित कर सकता है तो वह है विन्यास इस लिए रंगमंच से विन्यास को अलग नहीं किया जा सकता, हम यह मानते भी हैं कि नाटक एक सुनने एवं देखने का माध्यम है सुनने के लिए तो संवाद के साथ-साथ संगीत है इसलिए जो चीजें संवाद नहीं कह पाती है उसे संगीत कहती है, उसी प्रकार दृष्य भी है जो चीजें अभिनेता मंच पर नहीं दिखा सकता उसे विन्यास दिखाने में सक्षम है।

हम यह भी भली-भाँति जानते है कि मंच पर हम वही दिखाते हैं जिसकी हमें जरूरत है या वह नाटक के किसी भाग को व्याख्यायित करने में सहायक होता हो यूँ कहें कि जिस प्रकार अभिनेता का एक-एक मूवमेंट अर्थपूर्ण (लॉजिकल) होता है, उसी प्रकार आहार्य की एक-एक इकाई अर्थपूर्ण (लॉजिकल) होनी चाहिए, जब हम किसी भी आहार्य के इकाई को रखने के लिए उसके

अर्थ (लॉजिक) पर सोचते, विचार करते हैं तो जाहिर सी बात है कि उसमें हमारी सोच, हमारा विचार, हमारी दृष्टि उस विन्यास में होगी।

हमारे यहाँ (ट्रेंड) रिवाज रहा है मंच को सजाने की और देखने की दृष्टि भी वही रहा है कि, अरे क्या मंच सज्जा था, दिल ख़ुश कर दिया। क्या मंच सज्जा सिर्फ सजावट है?, सिर्फ प्रेक्षकों को चकाचौंध करने की इकाई है? प्रेक्षकों को दिल ख़ुश करने वाली दिलरूबा है? क्या दर्शकों को बहुत दिनों तक सपने गढ़ने वाला तंत्र है? नहीं.... हरगिज़ नहीं जब आहार्य भी अभिनय है, तो अभिनय की हर इकाई अर्थपूर्ण (लॉजिकल) होनी चाहिए नहीं तो वह फॉल्स इकाई होगी। रंगमंचीय विश्व में विन्यास को लेकर दो धाराएं देखने को मिलते हैं एक जो रंगमंचीय विन्यास में आहार्य को रखते हैं (बार्टोल्ट ब्रेख्त का एपीक थिएटर, स्टानेसलवासकी का मेथड थिएटर) दूसरा वो जो रंगमंचीय विन्यास से आहार्य को अलग करते हैं (बादल सरकार का तीसरा रंगमंच, ग्रोटोवस्की का गरीब रंगमंच, सफदर हासमी का नुक्कड़ रंगमंच) लेकिन इसका कतई मतलब ये नहीं होता कि रगमंच में विन्यास नहीं करते।

इस व्यापक रंगमंचीय इकाई को हमारे निर्देशक (कुछ निर्देशकों को छोड़कर) आज भी समझने में असमर्थ है, फिर हम अपने प्रेक्षक से क्या उम्मीद रखें, लेकिन वादे के साथ यह कहा जा सकता है कि प्रेक्षकों की यह स्थिति बनाने में हम निर्देशकों (ख़ास कर शौकिया रंगमंडलियों की) की अहम भूमिका रही है। क्योंकि हमेशा उनके पास धन का अभाव होता है इसलिए कभी-कभी विन्यास की इस व्यापक इकाई को समझते हुए भी उसे खाना पूर्ति करते हैं।

प्रस्तावित शोध विषय "रगमंचीय विन्यास की राजनीतिक परिकल्पना" को पाँच अध्यायों में विभाजित किया गाय है जो निम्न हैं। प्रथम अध्याय में-विन्यास के उद्भव एवं विकास, द्वितीय अध्याय- विन्यास में सौंदर्य की राजनीति, तृतीय अध्याय- रंगमंडप/प्रेक्षागृह विन्यास, चतुर्थ अध्याय- दृश्य विन्यास, पञ्चम अध्याय- रगमंचीय विन्यास व राजनीति के अंतरसंबंध। प्रस्तावित शोध उपरोक्त लिखित विभिन्न पक्षों पर केंद्रित है।

प्रस्तुत विषय में शोध प्रविधि के रूप में विषयानुसार विभिन्न शोध प्रविधियों को प्रयोग में लाया गया है। प्राथमिक श्रोत और द्वीतीयक हैं जिसमें प्राथमिक श्रोत के रूप में संरचित साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन का प्रयोग किया गया है। द्वीतीयक श्रोत के रूप में विषय वस्तु विश्लेषण प्रविधि को प्रयोग में लाया गया है।